Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.357
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2508S01V13P002

e-ISSN No. 2394-8426
Special Issue on Scientific Research Aug'25
Issue–VIII(I), Volume–XIII

आधुनिक संस्कृत महाकाव्य परम्परा में श्री बोधिसत्त्व चरितम् – एक अध्ययन

डॉ0 ओम नारायण
ईमेल–omgkpam0102@gmail.com
Mob. No.- 9140601438

भारतीय संस्कृति को विद्वानों ने चार वर्गों में विभाजित किया है जो वेद, व्याकरण, दर्शन व साहित्य के रूप में हैं, साथ ही संस्कृत के इतिहास को भी विद्वानों ने दो वर्गों में विभाजित किया है – वैदिक संस्कृत साहित्य एवं लौकिक संस्कृत साहित्य। वैदिक परम्परा में भी सर्वप्रथम श्रुति परम्परा प्रचलित थी, क्योंकि इस समय शिक्षा–दीक्षा (ज्ञान) गुरु–शिष्य के मध्य मौखिक ही हुआ करती थी। पुनः आगे चलकर लौकिक संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत आदि कवि वाल्मीकिकृत रामायण तथा महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत की रचना क्रमशः हुई और आगे चलकर इन्हीं दो ग्रन्थों को आधार बनाकर संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत जितने भी प्रमुख महाकवि हुए उन्होंने अनेक प्रकार के ग्रन्थों की सर्जना की। जिसमें प्रमुख रूप से महाकवि कालिदास कृत रघुवंशमहाकाव्यम्, कुमारसम्भवम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् इत्यादि हैं भास कृत – प्रतिमानाटक, उरुभंग, दूतघटोत्कच आदि, भारविंकृत–किरातार्जुनीयम्, महाकवि माघकृत–शिशुपालवधम्, श्रीहर्ष कृत नैषधीयचरितम्, ये उक्त तीनों रचनाएं संस्कृत साहित्य में बृहत्त्रयी के अन्तर्गत माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त भी संस्कृत साहित्य की परम्परा में और भी महाकाव्य प्रचलित हुए हैं।

आगे चलकर विद्वानों ने संस्कृत साहित्य की परम्परा में 17वीं शताब्दी से आधुनिक संस्कृत साहित्य का उदय माना है, परम्परा व आधुनिकता में पारस्परिक सम्बन्ध होते हैं ये दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, प्रत्येक युग का तत्कालीन साहित्य आधुनिक ही हुआ करता है, लेकिन कुछ को साहित्यकारों द्वारा किसी काल–विशेष में विभाजित करके एक निश्चित समय, सीमा प्रदान किया गया है। आधुनिक कवियों ने महाकाव्यों की रचना के क्षेत्र में अनेक राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक या अन्य कथावस्तु को लेकर अनेक महाकाव्यों की रचना किया है और अपने–अपने ढंग से महाकाव्यों में नायक–नायिकाओं का वर्णन किया है तथा महापुरुषों, दार्शनिकों और वीराङ्गनाओं, राजाओं या देवताओं को नायक–नायिका के रूप में वर्णन भी किया है। आधुनिक समय में संस्कृत साहित्य की रचनात्मक प्रवृत्ति में अनेक विविधता दिखाई पड़ती है। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही अंग्रेजी, बांग्ला, हिन्दी, प्राकृत भाषाओं के सम्पर्क से इसमें लघुकथा, उपन्यास, जीवनी, यात्रा साहित्य, पत्र–लेखन, निबन्ध, मुक्तककाव्य, एकांकी तथा मात्रिक छन्दों की अनेक विविधता दिखाई पड़ती है क्योंकि साहित्यकार जिस युग में रहता है उसे उस युग की विभिन्न परिस्थितियाँ प्रभावित करती हैं। जिसके फलस्वरूप महाकाव्य जैसी विधा में समग्र जीवन स्वभाव का व्यापक अभिव्यंजन होता है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में समसामयिक, विशिष्ट परिस्थितियों की क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं लक्षित होना स्वभाविक है। मानव जीवन के अन्तरंग एवं बहिरंग दोनों ही पक्ष महाकाव्य में प्रतिबिम्बित होते हैं जिसमें व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र की जटिल समस्याओं का गम्भीर उदात्त, विचारोत्तेजक तथा सरस वर्णन होता है। महाकाव्य में छन्दों की योजना रहने से भावों में सहज प्रभाव रहता है, जिससे सहृदय की प्रवृत्तियां द्रवित हो जाती हैं।

महाकाव्य स्वान्तः सुखाय होने के साथ ही स्वान्तः हिताय भी होता है और महाकाव्य में व्यक्त वर्णन के माध्यम से शाश्वत सत्य की ओर संकेत भी किया जाता है। यही कारण है कि संस्कृत में महाकवियों ने महाकाव्य को अधिक वरीयता दी है।

आधुनिक संस्कृत साहित्य में परम्परागत मान्यताओं के साथ–साथ अनेक नवीन उद्भावनाओं का भी समावेश हुआ है, किसी भी महाकाव्य का नायक धीरोदात्त गुणों से सम्पन्न कुलीन देव या महामानव होता

है। इसके अतिरिक्त भी महात्मा, योगी, समाज सुधारक, राजा अथवा विद्वान् आदि भी आधुनिक काल में महाकाव्य के नायक दिखाए गये हैं।

महाकाव्य का लक्षण –

संस्कृत भाषा में महाकाव्य के नाम से जब अधिक ग्रन्थों की रचना हो गयी तो सभी समीक्षकों का ध्यान महाकाव्य के लक्षण की ओर अग्रसर हुआ। तब लोगों ने सोचा की लक्ष्य का अनुसरण करने वाले लक्षण बनें। तब आगे चलकर भामह ने अपने काव्यालंकार (1/18–23) में, दण्डी ने काव्यादर्श (1/14–22) में, अग्निपुराण (अध्याय–337) में, रूद्रट ने काव्यालंकार (16/7–19) में तथा विश्वनाथ ने साहित्यदर्पण (6/315–25) में महाकाव्य के वर्णनात्मक लक्षण दिये। इन सभी प्रकार के काव्यशास्त्रियों के दिये गये महाकाव्यों के लक्षणों में अन्तरंग एवं बहिरंग का विशद् वर्णन किया गया है। इन सभी काव्यशास्त्रीय महाकवियों के दिये गये लक्षणों में अन्तिम एवं सर्वमान्य लक्षण विश्वनाथ कृत साहित्यदर्पण को व्यापक तथा महत्त्वपूर्ण एवं स्पष्ट माना जाता है। जो सभी के लिए सर्वमान्य है, महाकाव्य के लक्षणों में कुछ आवश्यक अथवा महत्त्वपूर्ण बातों को समाहित किया गया है, जैसे कि कथानक, नायक व रस से सम्बद्ध बाते, तथा कथानक की दृष्टि से महाकाव्य किसी भी प्रसिद्ध अथवा ऐतिहासिक घटना पर आश्रित होता है।[1]

महाकाव्य परम्परा में 'महाकाव्य' का लक्षण बताते हुए महाकवियों ने लिखा है कि महाकाव्य में कोई भी देवता या कुलीन क्षत्रिय, राजा या महापुरुष महाकाव्य का नायक होगा। इसी तरह नायिका के बारे में भी यही बात कही गयी है कि वीर क्षत्राणी या फिर देवियां महाकाव्य की नायिका होगी। साथ ही रस के बारे में लिखा गया है कि श्रृंगार, वीर अथवा शान्त रस की प्रधानता होगी तथा अन्य रस गौण रहेंगे। और कोई भी महाकाव्य सर्गों में ही विभाजित होगा तथा कम से कम आठ सर्ग होने चाहिए तभी वह महाकाव्य के अन्तर्गत माना जायेगा।

संस्कृत महाकाव्य को दो मार्गों में विभाजित किया गया है, सुकुमार और विचित्र मार्ग। प्रारम्भ में सुकुमार मार्ग ही अधिक प्रचलित था। इस सुकुमार मार्ग को रसमयी पद्धति भी कहते है।

सुकुमार मार्ग का वर्णन करते हुए कुन्तक ने अपने ग्रन्थ वक्रोक्तिजीवितम् (1/25–29) में कहा है कि –''कवि की अम्लान प्रतिभा से उत्पन्न, नूतन शब्दार्थ से कोमल, अनायास सम्पादित स्वल्प और मनोरम अलंकारों से युक्त, भावों की नैसर्गिकता के प्रधान्य से आहार्य (कृत्रिम) के कौशल को हीन बनाने वाला रस–भाव आदि ब्रह्मा के कौशल से सम्पन्न सृष्टि रचना के अतिशय (सौन्दर्यादि) के समान मनोरम यह सुकुमार मार्ग है जहाँ प्रतिभा के कारण सबकुछ नया–नया ही प्रतीत होता है।'' यही वह मार्ग है जिस पर श्रेष्ठ कविगण चले! जैसे जिये हुए कुसुमों से भरे वनमार्ग पर भ्रमर चलते हैं –

सुकुमारभिधः सोऽयं येन सत्कवयो गताः।
मार्गेणोत्फुल्ल–कुसुम–काननेनेव षट्पदाः।।[2]

इसी तरह से विचित्र मार्ग में पाडित्यपूर्ण शैली संस्कृत महाकाव्यों में मिलती है। समय की साहित्यिक मान्यता, युग का वातावरण तथा सामाजिक रूढ़ियों के कारण इस मार्ग का प्रवर्तन हुआ है।

काव्य के लक्षण को स्पष्ट करते हुए आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ काव्यप्रकाश में काव्य की परिभाषा दी है कि –**''तददोषौ शब्दार्थौ, सगुणावनलंऽकृती पुनः क्वापि''**[3] अर्थात् काव्य उस शब्द अर्थ को कहते हैं, जिसमें रस भंग करने वाला दोष नहीं होता है, और जो गुण से युक्त होता है, तथा साथ ही कहीं–कहीं अलंकार से रहित भी होता है। काव्य में शब्द और अर्थ दोनों का स्वरूप स्पष्ट होता है, एक बात और है कि काव्य में चमत्कार होना चाहिए, क्योंकि रस से उत्पन्न चमत्कार में अलंकार का निवेश गौण रहता है।

काव्य के भेद

संस्कृत साहित्य के परम्परा में काव्य को दो भागों में विभाजित किया गया है–

1. दृश्य काव्य
2. श्रव्य काव्य।

महाकाव्यों की परम्परा –

भारतीय संस्कृति में काव्य एवं महाकाव्य के निर्माण की प्रेरणा कवि समूह के द्वारा ही हमें प्राप्त होती है महाकाव्यों के सृजन का प्रारम्भ हम रामायण काल से ही मुख्य रूप से मानते हैं यही रामायण और महाभारत जैसे श्रेष्ठ एवं आदरणीय महाकाव्य, महाकाव्य परम्परा का प्रारम्भ करते हैं, यदि हम और प्राचीन काल में देखें तो प्रायः ज्ञान–विज्ञान की उत्पत्ति एवं विकास का बीजारोपण हमें वेद से मिलते हैं। वेद हमारे ज्ञानराशि का भण्डारण है और हमारी प्रेरणा का स्रोत भी क्योंकि विभिन्न विषयों का ज्ञान इसी वेद में मिलते हैं। वेद की विषय वस्तु को लेकर समस्त परवर्ती साहित्य फले–फूले हैं और यही कारण है कि जब हमें समस्त महाकाव्यों की उत्पत्ति एवं विकास का ज्ञान प्राप्त करना होता है तो हम वेद का ही सहारा लेते हैं। इसी क्रम में भारतीय मनीषियों एवं विद्वानों की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए उपजीव्यता को आधार मानकर वेद से ही प्राप्त तत्त्व ग्रहण करके व्यक्ति की जिज्ञासा को शान्त करने वाले ग्रन्थ रामायण तथा महाभारत का नाम स्वतः ही हमारे सामने आ जाता है।

प्रत्येक साहित्य शास्त्र में प्रतिभा सम्पन्न महाकवियों एवं लेखकों की लेखनी से उत्पन्न ऐसे महाकाव्यों की रचना हुआ करता है जिससे स्फूर्ति तथा प्रेरणा लेकर भविष्य के महाकवि अपने काव्य रूपी वृक्ष को सींचते हैं।

आधुनिक समय के कुछ प्रमुख संस्कृत महाकाव्य

संस्कृत साहित्य की धारा सदियों से निरन्तर प्रवाहित होती चली आ रही है तथा संस्कृत में शुरू से ही अनेक रचनाएं किये गये हैं कुछ विद्वानों का मानना है कि संस्कृत रचना का युग सत्रहवीं शताब्दी से अपने चरम पर आ गया। स्वातंत्र्योत्तर काल में इस ओर विद्वानों का ध्यान अधिक आकर्षित होने लगा और अनेक सत्य धीरे–धीरे करके सामने आने लगा। जैसे कि पिछली शताब्दी की यदि बात किया जाय तो 1901–2000 ई0 के बीच लगभग संस्कृत में प्रायः 350 महाकाव्यों की सर्जना की गयी है और कुछ महाकाव्यों को तो 64 से लेकर 84 सर्ग तक में भी विभाजित किया गया है।

पाश्चात्य काव्यशास्त्र की अनेक लोकप्रिय विधाएं जिसमें गीतिकाव्य, लघुकथा, उपन्यास, एकांकी, महाकाव्य व सानेट आदि भी लिखे गये हैं। कुछ विद्वान् 'आधुनिक संस्कृत साहित्य' शीर्षक के औचित्य पर प्रश्न उठाते हैं, क्योंकि उनका तर्क यह है कि आधुनिकता किसका धर्म है? काल या फिर साहित्य का? इसका उत्तर यह है कि अतीत, अनागत तथा वर्तमान – ये काल के ही धर्म हैं परन्तु इन्हीं कालखण्डों से जुड़ा हुआ साहित्य भी उपचार वश प्राचीन, वर्तमान तथा भावी कहा जा सकता है। इस प्रकार आधुनिक संस्कृत साहित्य का अर्थ हुआ कि आधुनिक काल से जुड़ा हुआ संस्कृत साहित्य।

प्रो0 राजेन्द्र मिश्र, डॉ0 जगन्नाथ पाठक एवं प्रो0 राधावल्लभ त्रिपाठी आदि संस्कृत के विद्वानों ने गहन विचार किया है। प्रो0 राजेन्द्र मिश्र ने सन् 1784 ई0 में सर विलियम जोन्स द्वारा अंग्रेजी में किये गये अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अनुवाद से ही संस्कृत रचना में आधुनिक काल का अवतरण मानते हैं और इसके कई प्रमाण भी दिये हैं।

अर्वाचीन महाकाव्यों में संस्कृत काव्य रचना में जो प्रभाव ईसा के द्वितीय शताब्दी से पहले हुआ है उसकी सतत् परम्परा वर्तमान में भी विद्यमान है। यदि हम ईसा के प्रथम शताब्दी की बात करें तो अनवरत काव्य की रचना में आने वाले भवभूति जैसे नाटककार, व सुबन्धु जैसे गद्यकार तथा कालिदास व भारवि जैसे महाकाव्यकार हो चुके हैं, तो 20वीं शताब्दी ने भी डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री, पं0 नारायण शुक्ल, पं0 काशीनाथ शर्मा द्विवेदी, पं0 उमापति द्विवेदी, पं0 कालिका प्रसाद शुक्ल जैसे कई विद्वान् महाकवि दिये हैं जो

आधुनिक युग में अपने विद्वत्ता के बल पर साहित्य सर्जना किये हैं। इसी क्रम में डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री जी ने भी अपने महाकाव्य श्रीबोधिसत्त्वचरितम् की रचना किये हैं जिसका विवरण इस प्रकार है–

श्रीबोधिसत्त्वचरितम् महाकाव्य –

डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री का जन्म 29 सितम्बर 1930 ई0 में लाहौर में हुआ था। प्रस्तुत महाकाव्य को 980 श्लोक व 14 सर्गों में विभक्त किया गया है। जिसमें से 09 सर्ग में विभिन्न रूपों में बोधिसत्त्व के अवदानों की कथा संग्रहित है। इन 09 रूपों में से चार– 2 से 5 रूप में बोधिसत्त्व को राजा के रूप में प्रस्तुत करते है, दो सर्ग – 08 व 11 में व्यापारी के रूप में शेष तीन सर्ग 6, 12 व 14 में क्रमशः उन्हें भिक्षु, कृषक तथा शिक्षक जीवन से सम्बन्धित किया गया है। इन रूपों के माध्यम से बोधिसत्त्व का जीवन बौद्धधर्म के कतिपय नैतिक आदर्शों की व्याख्या करता है जो पाठकों के लिए अनुकरणीय है।

कथावस्तु – जातक कथाएं बौद्ध साहित्य ''त्रिपिटक'' के द्वितीय भाग, सुत्तपिटक के पांचवें व अन्तिम निकाय, दुख निकाय' के 15 सर्गों में से दशवें भाग के अन्तर्गत आता है।

इस महाकाव्य का प्रारम्भ अधोलिखित मंगलाचरण से हुआ है–

शास्तेति नाम्ना प्रथितो महात्मा
बुद्धः प्रबुद्धो जनताहिताय।
प्राग्जन्मवृत्तान्तकथास्तदीया
गीर्वाणवाण्या समुदीरयामि।।[4]

उपर्युक्त मङ्गलाचरण में लोक कल्याण के लिए हमेशा जागरूक एवं शास्तृ के नाम से प्रसिद्ध महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्म की चरितगाथाओं को अत्यधिक सुन्दर ढंग से महाकवि द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

महात्मा बुद्ध के बोधिसत्त्व जीवन के ये आदर्श अथवा मूल्य सात कथाओं (02–05, 07–09) में उदात्त चरित्र का स्वरूप प्रस्तुत करता है और बाकी दो कथाएं (06, 10–01) में बोधिसत्त्व द्वारा इस समाज को दिये गये उपदेश से परिचित कराता है जिससे लोग सत्य के प्रति सजग व जागरूक रहें।

महाकवि ने एक जगह लिखा है कि प्राचीन समय में काशी के शासन को सुशोभित करने वाले ब्रह्मदत्त नाम के एक राजा थे जो प्रजा का पालन एवं शिक्षण बहुत ही अच्छे ढंग से किया करते थे, तथा साथ ही अपने सद्गुणों से इनको बहुत ही ख्याति प्राप्त था। अपने राज्य के प्रशासन में तत्पर इनके राज्य में (पंच महाभूतों से परिपूर्ण) पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश– मानों सुख का विस्तार किया हो, तथा साथ ही प्रजा पालक एवं उदार कीर्ति वाले सृष्टि विधाता ब्रह्मा के समान यह अपने राज्य में शोभायमान थे। इनके राज्य में वाराणसी (काशी) नगरी दर्शकों के नेत्रों को लुभाने वाली थी यहाँ पर घर–घर में व्याप्त वैभव आकाश अर्थात् 'बादलों' को छूने वाला था। इसी काशी नगरी में महात्मा बोधिसत्त्व एक वैश्य के घर में जन्म लिया, तथा इनके जन्म के समय ही सभी दिशाएं निर्मल सी हो गयी तथा सुखद हवाएं बहने लगीं –

श्रीबोधिसत्त्वो भगवान् महात्मा
वैश्यस्य कस्यापि गृहे प्रजज्ञे।
यज्जन्मना सर्वदिशः प्रसेदु –
र्ववुः सुखा गन्धवहाश्च भूयः।।[5]

वैश्य के घर में जन्मे बालक का धीरे–धीरे विकास होने लगा और वे तत्त्वज्ञानी कुमार लोकव्यवहार में निपुण होने लगा।

इसी क्रम में एक जगह पर महाकवि ने हिंसा के प्रति अपनी बातों को व्याख्यायित करते हुए कहते हैं कि हिंसक के प्रति हिंसा का व्यवहार करने से हिंसा की भावना बढ़ती ही है परम सुख की उपलब्धि के लिए अहिंसा का मार्ग ही श्रेयष्कर है।

शान्त्या प्रशमयेत् क्रोधं सलिलेनेव पावकम्।
चित्तं प्रसादयेद् धीमान् सर्वभूतानुकम्पया।।[6]

जिस प्रकार पानी से अग्नि को शान्त किया जाता है ठीक उसी प्रकार शान्ति का आश्रय लेकर क्रोध को शान्त करना चाहिए और जीवों पर दया दिखाकर बुद्धिमान् व्यक्ति का यह कर्तव्य होना चाहिए कि अपने मन को निर्मल करे।

एक अन्यत्र जगह पर महाकवि ने बोधिसत्त्व को अरिष्टपुर नरेश शिवि के रूप में वर्णन किया है। यहाँ पर एक भिक्षु शिक्षा पाने के उद्देश्य से विचरण करता हुआ श्रावस्ती नगर में पहुँच गया। इस नगरी से वापस लौटते हुए आभूषणों से अलंकृत अत्यन्त सुन्दर रूपवती किसी स्त्री को वह भिक्षु देखा। उसे देखते ही वह उस पर मोहित हो गया तथा उसके ध्यान में सदा रहने लगा और उसके चिन्तन में वह दिन–रात बिताने लगा। तब उसका साथी भिक्षु उसे अरिष्टपुर नरेश शिवि की कथा को सुनाकर उसका ध्यान स्त्री के तरफ से हटाकर शिक्षा के प्रति आकर्षित करने लगा और कहा –

दुःखेऽत्र लोके विषयानुषक्ते
बुद्धस्य जन्माऽपि सुदुर्लभं हि।
यस्योपदेशश्रवणान्मनुष्यो
निरत्ययं सौख्यमनन्तमेति।।[7]

अर्थात् विषयों के आसंग में ग्रस्त इस दुःखमय संसार में श्रीबुद्ध (बोधिसत्त्व) का जन्म होना दुष्कर है, जिनके उपदेशों के श्रवण से मनुष्य निर्बाध होकर अनन्त सुखों को प्राप्त करता है। कीट से लेकर मनुष्य योनि तक सभी में यह काम–विकार समान रूप से व्याप्त है किन्तु जो प्राणी इसके अधीन हो जाते हैं वे अपने मार्ग से भटक जाते हैं और जो इसे त्याग देते हैं वह सदा के लिए उच्च मार्ग पर प्रशस्त होते हैं। राग विषयक प्रवृत्ति प्रबल हो जाने से तुम्हारा कामजनित मनोविकार बढ़ गया था। अब तुम अच्छे मार्ग पर चलो। जिससे तुम्हारा कल्याण हो तथा जीवन समृद्ध हो।

एक और जगह पर महाकवि ने मृत्यु के विषय में लिखा है कि शरीर का नाश होना तय है यह नश्वर शरीर है। इस संसार में जो आया है उसे जाना ही है, यही प्रकृति है, जिसे हमें हर परिस्थिति में स्वीकार करना ही होगा।

आगे महाकवि ने बोधिसत्त्व को एक व्यापारी के रूप में वर्णित किया है –

मगधजनपदस्थे प्राक् पुरे राजगेहे
नृपतिरभवदेकः सावधानः स्वदेहे।
विमलमतिरुदारः कीर्तिमान् यो वदान्यः
समुचितमचकासीत् पुण्यवान् सर्वमान्यः।।[8]

अर्थात् तात्पर्य यह है कि प्राचीन समय में मगध जनपद के अन्दर राजगेह नामक नगर में अपने शरीर के प्रति सावधान, निर्मल–मति, उदार, कीर्तिमान्, पुण्याशय तथा प्रजा द्वारा अभिनन्दित एक राजा अपने गुणों से सुशोभित थे।

सौभाग्यवश उसी नगर में एक विवेकशील तथा करूणार्द्र हृदय वाले श्रीबोधिसत्त्व निवास करते थे। अभिनव कन्तिमान्, धनराशि के स्वामी, दीप्तिमान् श्रीबोधिसत्त्व वहाँ के प्रमुख सेठ (व्यापारी) थे और संघ के नाम से प्रसिद्ध थे।

एक अन्य जगह पर महाकवि ने कर्म की महत्ता को बताते हुए लिखा है कि केवल नाम से मनुष्य का कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, इसलिए हमें विशेष रूप से गुरूपार्जन तथा विद्याग्रहण में प्रयत्न करना

चाहिए। नाम को बहुत महत्त्व नहीं देना चाहिए। मनुष्य सत्कर्मों से ही सिद्धि पाता है, नाम से नहीं, क्योंकि सत्कर्म की तुलना में वह तुच्छ है, नाम तो मात्र उपाधि है।

इत्यादि सर्व भगवान् स बुद्धः
शु(ोदयो वक्ति वचः प्रबुद्धः।
लघीयसानेन कथानकेन
प्रदीप्यमानो यशसोन्नतेन।।[9]

इस लघु कथानक के माध्यम से उदार, यश से प्रदीप्त, पवित्र जन्म वाले, परम विवेकशील भगवान् महात्मा बुद्ध ने इस प्रकार का उपदेश अपने शिष्य उस पापक को दिया है।

इस प्रकार से डॉ0 सत्यव्रत शास्त्री जी द्वारा रचित यह श्रीबोधिसत्त्वचरितम् महाकाव्य एक व्यक्ति अथवा चरित पर आधारित न होकर अनेक चरित्रों पर आधारित है। लेकिन फिर भी समस्त महाकाव्य की विविध कथाओं को एकता के सूत्र में बाँधने वाले बोधिसत्त्व की आत्मा एक ही है जो इन सभी चौदहों सर्गों के विविध पात्रों में व्याप्त है तथा जिसका व्यवहार, क्रिया एवं प्रभाव एक समान है, जो इस महाकाव्य का एक तत्त्व शक्ति भी है, तथा साथ ही इसके कथानक के गौरव को भी बढ़ाता है और इसे एक सूत्र में बाँधने के साथ ही एक बृहत्तम् महाकाव्य का आयाम भी प्रदान करता है जो अन्य महाकाव्यों से थोड़ा अलग है और हम लोगों के लिए प्रेरणास्रोत भी है।

संदर्भ सूची

1. संस्कृत साहित्य का इतिहास – डॉ0 उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पृ0 195
2. वही, पृ0 197
3. काव्यप्रकाश – डॉ0 श्रीनिवास शास्त्री, प्रथम उल्लास, पृ0 18
4. डॉ0 सत्यव्रतशास्त्री कृत श्रीबोधिसत्त्वचरितम् महाकाव्य, सर्ग संख्या–01, श्लोक संख्या–01
5. वही, सर्ग–01, श्लोक–05
6. वही, सर्ग–03, श्लोक–81
7. वही, सर्ग–06, श्लोक–23
8. वही, सर्ग–13, श्लोक–01
9. वही, सर्ग–14, श्लोक–44